एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

ग्रामीण युवाओं का प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण

*अभिषेक सोनकर[1], अनुराग दीक्षित[2] एवं अभिषेक सोनकर[2]
[1]शोध छात्र, मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़ (उ.प्र.)
[2]शोध छात्र, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या (उ.प्र.)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: apnasonkar12345@gmail.com

भारत की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि और ग्रामीण गतिविधियों पर आधारित है। ग्रामीण क्षेत्र में युवाओं की संख्या बहुत अधिक है और यह देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। यदि उन्हें उचित प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण प्रदान किया जाए तो वे न केवल कृषि उत्पादन बढ़ा सकते हैं, बल्कि कृषि आधारित उद्यमिता, रोजगार सृजन और ग्रामीण विकास में भी भागीदार बन सकते हैं। ग्रामीण युवाओं को आधुनिक कृषि तकनीक, उद्यमिता कौशल और डिजिटल तकनीक में दक्ष बनाने के लिए प्रभावी प्रशिक्षण कार्यक्रम और क्षमता निर्माण योजनाएँ आवश्यक हैं।

ग्रामीण युवाओं के प्रशिक्षण की आवश्यकता

1. **तकनीकी दक्षता की कमी** – अधिकांश ग्रामीण युवा पारंपरिक कृषि पद्धतियों तक सीमित हैं और आधुनिक तकनीक, जैसे सटीक कृषि, ड्रिप/स्प्रिंकलर सिंचाई, जैविक खेती, आदि से अनभिज्ञ हैं।
2. **रोजगार सृजन** – प्रशिक्षण के माध्यम से ग्रामीण युवा स्वरोजगार या रोजगारोन्मुखी गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं।
3. **कृषि उद्यमिता** – प्रशिक्षण से युवा कृषि आधारित उद्योग, प्रोसेसिंग, पैकेजिंग और मार्केटिंग के क्षेत्र में काम कर सकते हैं।
4. **सामाजिक नेतृत्व** – प्रशिक्षित युवा गांव में सामाजिक नेतृत्व कर सकते हैं, जैसे किसान क्लब, महिला समूह और FPOs में सक्रिय भूमिका निभाना।
5. **जलवायु परिवर्तन से अनुकूलन** – बदलती जलवायु परिस्थितियों के अनुरूप खेती करने के लिए जलवायु स्मार्ट तकनीकें सिखाना आवश्यक है।

प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण के क्षेत्र

1. **कृषि एवं उन्नत तकनीक**
- उच्च उत्पादकता वाली फसल किस्में, सटीक कृषि, ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई।
- जैविक खाद, कम्पोस्ट, कीट प्रबंधन और रोग नियंत्रण।

2. **पशुपालन और डेयरी**
- दुग्ध उत्पादन, मुर्गीपालन, मत्स्यपालन और बकरीपालन में आधुनिक तकनीक।
- पशुओं के स्वास्थ्य और पोषण पर प्रशिक्षण।

3. **कृषि प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन**
- फसल प्रोसेसिंग, पैकेजिंग, ब्रांडिंग, स्थानीय बाजारों में विपणन।
- खाद्य सुरक्षा और हाइजीन प्रबंधन।

4. **डिजिटल कृषि (ICT आधारित कृषि)**

- मोबाइल ऐप्स, किसान कॉल सेंटर, ई-नाम और डिजिटल मार्केटिंग।
- मौसम पूर्वानुमान, मिट्टी परीक्षण और कृषि सलाह ऑनलाइन प्राप्त करना।

5. **उद्यमिता एवं स्वरोजगार**

- लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, कृषि आधारित स्टार्टअप।
- व्यवसाय योजना, वित्तीय प्रबंधन, मार्केटिंग और ब्रांडिंग।

6. **पर्यावरण एवं जलवायु स्मार्ट कृषि**

- वर्षा जल संचयन, सौर ऊर्जा का उपयोग, जलवायु अनुकूल फसल तकनीक।
- जैव विविधता संरक्षण और कार्बन फुटप्रिंट कम करने की तकनीक।

प्रशिक्षण प्रदान करने वाली संस्थाएँ

1. **कृषि विज्ञान केंद्र (KVK)** – विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों और डेमो फार्म के माध्यम से।
2. **राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM)** – ग्रामीण युवाओं को कौशल विकास और स्वरोजगार में मदद।
3. **प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)** – तकनीकी और गैर-तकनीकी क्षेत्रों में प्रशिक्षण।
4. **आईटीआई और पॉलिटेक्निक संस्थान** – रोजगारोन्मुखी तकनीकी शिक्षा।
5. **ग्राम पंचायत एवं सहकारी समितियाँ** – स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम।
6. **एनजीओ और निजी संस्थाएँ** – स्टार्टअप, उद्यमिता और डिजिटल प्रशिक्षण।

प्रशिक्षण के लाभ

1. **रोजगार और स्वरोजगार** – युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना।
2. **आर्थिक विकास** – उत्पादकता और आय में वृद्धि।
3. **ग्रामीण समाज का सशक्तिकरण** – युवा सामाजिक नेतृत्व में भाग लेते हैं।
4. **कृषि में नवाचार** – नई तकनीक अपनाना और फैलाना।
5. **सतत कृषि प्रथाओं को बढ़ावा** – पर्यावरणीय संरक्षण और संसाधन प्रबंधन।

चुनौतियाँ

1. ग्रामीण युवाओं की शिक्षा और डिजिटल साक्षरता का कम स्तर।
2. प्रशिक्षण केंद्रों की संख्या और संसाधनों की कमी।
3. प्रशिक्षित युवाओं के लिए पर्याप्त रोजगार अवसर का अभाव।
4. पलायन की समस्या – प्रशिक्षित युवा शहरी क्षेत्रों की ओर चले जाते हैं।
5. वित्तीय सहायता और ऋण सुविधाओं की कमी।

सुझाव एवं रणनीतियाँ

1. अधिक प्रशिक्षण केंद्र और प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्राम स्तर पर आयोजित करना।
2. स्थानीय जरूरतों और अवसरों के अनुसार प्रशिक्षण योजनाओं का निर्माण।
3. स्टार्टअप और उद्यमिता प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से रोजगार सुनिश्चित करना।
4. सरकारी और निजी क्षेत्र की साझेदारी (PPP) के माध्यम से प्रशिक्षण का विस्तार।
5. डिजिटल और ICT आधारित प्रशिक्षण – मोबाइल ऐप्स, वीडियो, ऑनलाइन कोर्स।
6. सफल ग्रामीण युवाओं के उदाहरण साझा कर अन्य युवाओं को प्रेरित करना।

निष्कर्ष

ग्रामीण युवाओं का प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण न केवल उनकी व्यक्तिगत प्रगति के लिए, बल्कि ग्रामीण एवं राष्ट्रीय विकास के लिए भी अनिवार्य है। प्रशिक्षित और सशक्त युवा कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में नई तकनीकों, नवाचार और उद्यमिता को अपनाकर ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार, उत्पादकता और आर्थिक समृद्धि ला सकते हैं।

यदि प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए तो यह कृषि क्षेत्र में स्थायित्व, रोजगार सृजन और ग्रामीण विकास का प्रमुख साधन बन सकती हैं।